: चतुर्थ अध्याय :

"लाल-पीली जमीन": एक अनुशीलन

१. भयावह परिवेश।

२. भयावह परिवेश की हिंस्रता।

३. गुंडई।

४. नारी शोषण के विविध आयाम।

५. स्त्री-पुरुष यौन-संबंध अथवा स्त्री-पुरुष यौन-संबंधों में काम कुंठा।

६. उत्सव पर्व।

७. अंधविश्वास।

८. जातीय भेदाभेद।

९. छात्र आंदोलन।

१०. आपसी संघर्ष।

११. विविध प्रकार के खेल और मनोरंजन के तौरतरीके।

: चतुर्थ अध्याय :

लाल-पीली जमीन : एक अनुशीलन

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध का यह एक केंद्रिय अध्याय हैं। इसमें हमने प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित भयावह परिवेश, भयावह परिवेश की हिंस्त्रता, भयावह परिवेश में स्थित गुंडई, नारीशोषन के विविध आयाम, इस परिवेश में काम कुंठा, हिंस्त्रता, अंधविश्वास, जातीय भेदा-भेद, छात्रआंदोलन, आपसी संघर्ष, भ्रष्टाचार, आदालती मुकदमें, शहरकी असुरक्षितता, विस्थापन, और विविध प्रकारके इन लोगों के मनोरंजन के तौरतरीकें आदिको मध्यनजर रखते हुए हमने "लाल-पीली जमीन" का अनुशीलन करनेका प्रयास किया है।

१. भयावह परिवेश

"लाल-पीली जमीन" उपन्यास चार भागोमें विभाजित है, यह साठोत्तरी कालखंडका प्रयोगधर्मी उपन्यास है। इसमें आरंभसे लेकर अंततक भयावह परिवेश और असुरक्षित जिंदगीको चित्रित किया है। "लाल-पीली जमीन", भयावहतासे ओतप्रोत है। इस उपन्यास में भयावह हिंस्त्र शक्ति के सामने उपन्यास में चित्रित व्यक्ति, अपनी समस्त जिजीशाके साथ असहय बन पडे हैं। इन व्यक्तियोंके सामने टूटनेके सिवा, बिखर जानेके सिवा, अंदरही-अंदर घुल जाने के सिवा कोई पर्याय नहीं है। इस परिवेशकी भयावहता इतनी सर्वग्राही है कि, पाठक भी इससे भयभीत होते हैं। डॉ.बांदिवडेकरजी के मतानुसार - "गोविंद मिश्रजीने व्यक्ति - केशवको विलक्षण

तीव्र संवेदन-क्षमता देकर परिवेशकी मारके बदलेमें इस संवदेनाकी राख में परिणित होनेवाली चिंगारियोंका अजीबसा विद्युत आलोचक पैदा किया है।"[१] इस परिवेश में उत्पन्न हर व्यक्ति उखडनेके लिए पैदा हुआ है। व्यक्तिकी असहायता, करुणा और संत्रासमयी जिंदगी की कराहें इस भयावहता में अधिक जान डालती है। प्रस्तु उपन्यासकी जमीन न शहर की, न गांवकी है, दोनों में केवल भयावहता को लिया गया है। जीवन की यातनाको प्रतिकात्मक ढंगसे विराट उग्रताका आयाम देखनेका कार्य इस उपन्यासमें हुआ है। यहाँ इस शहरकी अनियंत्रित जीवनकी दिशाहीन बाढ की विकालता प्रतिबिंबित करनेका महत्वपूर्ण कार्य लेखकने किया है।

यहाँ पहाड, किला, बुर्ज, पेडहीन जमीन, काली बडी चट्टानें, पत्थरीली उबड-खाबड गली, पीपलकी सरसराहट, कालापलकी छाया लिए हुए मंदिर, जंगली तेंदुए तेंदुओंका रातभर सतानेवाला भय, मंदिर का भुतहाईलाखा, लखनऊ के घरके किवाडपर सर्प मैथुन, साडोंकी लडाई, पंडित द्वारा पत्नी की बेरहमीसे पिटाई, इन इलाखोंसे चिपकी भूतकी कथाएँ, माखियों बर्रें, थल्ले सुनारका गिरा हुआ घर आदिके कारण इस परिवेशकी भयावहता अधिक बढी हुआी लगती है। यहाँ के बच्चें भी भयभीत होते हैं। एक व्यक्ति के भयसे गुल्ली डंडा खेलनेवाले बच्चें भाग जाते है - "केशवको बार-बार लग रहा था कि वहीं वह आदमी है, दिनभर इस मुहल्लेपर भूतकी तरह मंडराता रहता है।" आगे इस भयसे पीडित केशवकी मनस्थिति देखिएँ - "पीछे भूत... तेंदुआ... इस तरफसे राक्षस - ऊपरी हिस्सेपर उठकर खडी ठठरियाँ, लिये हुए मुर्दे, एकके बाद एक... और एकदम सामने वह रखैला पत्थर केशवको लगा सब चारोंतरफसे जखडनेके लिए बड रहे हैं।" इस भयावह परिवेशसे केशव बार-बार भयभीत होता है।

इस प्रकार लेखकने भयावह परिवेश का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में

करके एक अच्छा खासा डरावना माहौल पाठकों के सामने रखा है। परिवेश की उपज के रूपमें चित्रित पात्र भी भयावह हरकतों से युक्त हैं। इन पात्रों की हरकतोंमें परिवेशजन्य भयावहताके दर्शन होते हैं। इस भयावह परिवेश के साथ कई कथाएँ भी ऐसी हैं जो भयावहता के ही संकेत देती हैं। इसका विस्तृत वर्णन "शैल्पिक अध्ययन" इस अध्याय में किया है। यहाँ पुनरावृत्तिको टालने के लिए केवल संकेत ही दिए हैं।

२. भयावह परिवेश की हिंस्रता

"लाल-पीली जमीन" में केवल भयावह परिवेशकाही चित्रण लेखक ने न करके भयावह परिवेशकी हिंस्रता पर भी प्रकाश डालने का काम सफलता के साथ किया है। इस अंचल की संस्कारभूमि शुरू से अमानवीय यौन भद्रता के खिलाफ है। उपन्यास के "फालतु", "घर", "चौपड", "मात" आदि भागोंसे गुजरते हुए इस हिंस्त्रताका पता चलता है। इस हिंसा और यातनाओं से घिरे संदर्भोंकी तलाश हम सामंतवादी संस्कारों के बीच खोज सकते हैं। आजादी के बादकी राजनीति भी इस हिंस्त्रताकी जमीन से जुडी हुई हैं - "यह उपन्यास कोमलताके विरूद्ध सक्रिय हिंसा और उससे उत्पन्न त्रासद अनुभवोंकी तिखी पहचान करता है। इस क्रूर परिवेश में अपनी पहचान कराने निकला व्यक्ति अकेलापन, परायेपन, और यथार्थताके अनुभवके लिए अभिशप्त लगता है।"[२] शहरसे दूर बसी बस्ती गाली-गलौज और मार-पीट के बहुविध आयामोंसे हिंस्त्र बन चुकी हैं। कल्लू, कैलाश, शिवराम, कल्लन, नारायण, पंडित, आदि सभी पात्र परिवेशजन्य हिंसासे अभिशप्त लगते हैं। यहाँ एक वर्गका हिंसक स्वभाव, कोमलताको सिर उठातेही कुचल देता है। आदर्शवादी मास्टर कंठीकी बेरहमीसे कत्ल की जाती है। मास्टर कैलाशकी लडकी के साथ बलात्कार किया जाता है। शांती को भी पंडितजीके बलात्कारसे ग्रस्त होकर मौत के घाट उतरना पडता है।

प्रस्तुत उपन्यास में राजनीतिक दावपेंच के नीचे हिंस्त्रताके लक्षण उभर ऊठते हैं। छात्र आंदोलन, पुलिस अत्याचार, गोलीबारी, पथराव, इन सभी तथ्यों के बीच हिंसाके दर्शन होते हैं। स्पष्ट है कि, इस उपन्यास में भयावह परिवेश के साथ-साथ हिंसा के भी दर्शन होते हैं। यहाँ का हर पात्र हिंसाकी पृष्ठभूमि पर खडा नजर आता है। यहाँ के नारीपात्र, मास्टर कौशल, प्रिन्सिपल कंठी मात्र इसके अपवाद हैं। प्रिन्सिपल कंठी की हत्या इस हिंस्त्रताका ऊँचा उदाहरण हो सकता है।

३. गुंडई

"आजादी के बाद गुण्डे, लुटेरे और लफंगे पनपे और फले-फूलें हैं। गुटबंदियों का विकास हुआ है, शिक्षाका भयंकर ऱ्हास हुआ है। महात्मा गांधी के नामपर हिंसाका बोलबाला शुरू हो गया है, सरकारी दफ्तरें, कचहरियें और पुलिस विभागों की दुर्गति हुअी है। चुनाव लडे और जीते जाते हैं, समाज और व्यवस्थाकी हर सरगरमी पर घोर अवसरवादियों और आदर्शच्युत लोगों का कब्जा है।"[3] ये सारे तथ्य गुंडई और नंगइ को प्रश्रय दे रहे हैं। "लाल-पीली जमीन" में पनपने वाली गुंडई इन तथ्योंसे परिपूर्ण लगती है।

जिस परिवेश में भयावहता और हिंस्त्रताका निवास रहता है, उस परिवेश में लेखकने युवाछात्रवर्ग में पनपनेवाली गुंडई की ओर संकेत करते हुए पूरे युवा समुदायको बेनकाब कर दिया गया है। ये सभी युवाछात्र बुंदेलखण्ड के उपनगर के निवासी हैं, और एकही स्तर में उत्पन्न हुअे हैं। ये छात्र असामाजिक गुंडईको अपनाते हैं।

काशीनाथसिंह के - "अपना-अपना मोर्चा", शिवप्रसाद सिंह के "गली आगे मुडती है" इन दो उपन्यासोंमें छात्रोंकी गुंडई के दर्शन होते हैं। परंतु यह गुंडई समाज केंद्रित लगती हैं।

छात्रों की गुंडई को चित्रित करनेवाले अन्यभी असामाजिक तत्व इस उपन्यास में घूसे हुए हैं। कल्लू, शिवमंगल, सुरेश, शिवराम, कैलाश, जैसे आवारा गुंडई की तरफ प्रवृत्त हुए हैं। झल्लू पंडित शिवहरे ये पात्र भी गुंडई को ओर प्रवृत हुए हैं। प्रिसिंपल के रिटायर होनेपर हडताल, जुलूस, नारेबाजी, पथराव, लाटीप्रहार, अग्नीकांड, नेतागीरी, आदिके माध्यमसे गुंडई के विविध आयाम यहां दिखाई देते हैं।

शिवमंगल कैलाश मास्टरकी पीटाई करके और प्रिन्सिपल कंठीकी कत्ल करके अपनी गुंडई का परिचय देता है। सुरेश "सुरेश टैक्स" लगवाकर, भट्टकी लडकी पर बलात्कार करके अपनी गुंडईका परिचय देता हैं। कल्लू मास्टर कैलाश की बेटीको भगा ले जाकर और उससे शादी करके अपनी गुंडई के दर्शन करा देते है। झल्लू पंडित शांतिपर बलात्कार करके और नारायण को मारनेवाले सुरेश के साथ संघर्ष करके अपनी गुंडई प्रस्तुत करता है।

स्पष्ट है कि प्रस्तुत उपन्यास में गुंडई के कई विविध आयाम देखनेको मिलते हैं। या गुंडई कभी जातीय भेदाभेदकी छाव में, तो कभी-कभी राजनीतिकी ओटमें पलती है। उपन्यास में घोर पार्टी बंदी के दर्शन होते हैं। किन्तु यह राजनीति किस्मकी पार्टी बंदीयोंसे भिन्न जातीयवादी और गुंडागर्दीवाली पार्टीबंदी हैं। यादवपार्टी और चौबे पार्टी खुलकर मैदान में हैं। बीच में बोस साहब, राजनीतिक आदमी है, जो अपने स्वार्थ के लिए दोनों को इस्तेमाल करते हैं। कॉलेज का विद्रोह भी सामने है, पर वह भी अराजनीतिक है परंतु फिरभी इसे राजनीतिक रंग देनेका काम कई लोग करते हैं। डॉ.विवेकी रायके शब्दों में "लेखक गोविंद मिश्र यहाँ गुंडई के जाना रूपोंको पेश करते हैं। अंधकार में भटकते ये युवक कहीं खुलते है कही अनखुले रह जाते हैं। उपन्यासके अंतिम भाग में सुरेश से पूछा जाता है कि उसे किससे "निपटना"

है या किसको "ठिकाने लगाना है", तो उसे कुछ नहीं सुझता।"[४] यहाँ "निपटना" "ठिकाने लगाना" आदि शब्दोंमें गुंडई के दर्शन होते हैं। आज नगरों, महानगरों, ग्रामांचलों, नगरोंसे दूर बसी बस्तीयोंमें गुंडईकी समस्या दिन-ब-दिन बढती जा रही है। अनेक महानगरोंमें गुंडई को बढावा देनेवाली अनेक टोलियाँ कार्यरत हैं।

इस गुंडई की सभी घटनाओंका साक्षी केशव हैं। वह गांवसे भागकर शिक्षा और सुरक्षा के हेतु अपने माता-पितासहित नगरकी इस खुरदरी बस्तीमें आता है। वही उसका परिवार नैतिकता की कचोटमें आकर बिखरने लगते हैं। अंतमें केशवका पिता नगरकी बढती आवारागर्दी और गुंडई से तंग आकर अपने गांव फिर जानेका फैसला करता है। केशव के पिताकी यह पीडा पूरे भारतीय समाजकी पीडा लगती है।

गुंडई की समस्यामें इस बातपर गहराई के साथ सोचा हैं इसलिए यहाँ केवल निर्देशही दिये गये हैं।

४. नारीशोषण के विविध आयाम

भारत में सदियोंसे नारी शोषण की परंपरा चली आयी हैं। कभी दहेजके नामपर कभी, बलात्कारके नामपर, कभी छल-छदमके नामपर, कभी भोगासक्तिके नामपर, कभी दुर्बलता के नामपर सदियों से नारी शोषण होता आया है। हिंदी भाषाके साहित्यमें नारी शोषण के विविध आयामोंपर पुरुष लेखकोंने तथा महिला लेखिकाओंने खुलकर प्रकाश डालनेका काम किया है। प्रस्तुत उपन्यास "लाल-पीली जमीन" में इस उपन्यासके माहौल में रहनेवाली नारीकी दर्द भरी सिसकियों को नारी शोषण के माध्यमसे वाणी देनेका काम प्रभावी ढंगसे किया है। उपन्यास के प्रारंभ में रातके अंधियारे में रोती कलपती हुओ एक औरतके दर्शन होते हैं। वह नारी चाचा की बहूको जलते

हुए चौलोंसे कैसे मार-मारकर भगा दिया इसका वृत्तांत पेश करके नारीशोषण का एक प्रभावी आयाम खोलकर रखती है। केशव के पडोस में रहनेवाली एक औरतका खुदको जलाकर खुदकुशी करना, अपनी दूसरी विवाहिता पत्नीको थल्ले सुनार द्वारा बेरहमीसे पीटना, झल्लू पंडितद्वारा शांतीपर बलात्कार करके उसे खुदकुशी करनेके लिए बाध्य करना, सुरेश द्वारा भट्टकी लडकीपर बलात्कार करके उसकी दूसरी लडकीपर बलात्कार करनेका संकेत देना, कल्लूद्वारा मास्टर कैलाशकी बेटीको भगा ले जाना, मालतीका विवाह एक प्रौढ व्यक्ति सर्वेशके साथ संपन्न कराना, युवावस्थामें पदार्पित छबिको घरकी चार दीवारों में कैद कर देना, आदिके माध्यमसे नारी शोषण के विविध आयाम यहाँ स्पष्ट होते हैं। नारीशोषण की समस्यामें इसपर विस्तार से सोचा हैं। यहाँ केवल शोषित, पीडित, नारियों के उदाहरण ही प्रस्तुत किये हैं।

गोविंद मिश्रजीने नारीशोषण के माध्यमसे नारीकी पीडाके विविध पहलुओं को तलाशनेका काम सफलताके साथ किया है। यहाँ शन्नोमौसी, केशवकी माँ का भी भोगासक्तिके नामपर शोषण हो रहा है। शांती और भट्टकी लडकीका शोषण भी भोगासक्ति के नामपर हो रहा है। विवाह योग्य युवतियों को घरकी चार दीवारें के अंदर बंद करके भी उनके माता-पिताद्वारा उनका शोषण किया जा रहा है। युवतियों को मनचाहा पति चुनने के अधिकारपर नियंत्रण रखकर भी नारीशोषण हो रहा है। गोविंद मिश्रजीने इन सभी शोषणके आयामोंपर चिंतन करके इस परिवेश में पलनेवाली नारियोंकी असुरक्षापर चिन्ता प्रकट की हैं।

५. स्त्री-पुरुष यौन संबंध अथवा स्त्री-पुरुष यौन संबंधोंमें काम कुंठा

भारतीय समाज व्यवस्थामें यौन संबंधोंकी स्थापना के लिए विवाह संस्थाके अतिरिक्त अन्यमार्गोंसे भी यौन-संबंध स्थापित किये जाते हैं। कहीपर स्वच्छंदी यौन-संबंध स्थापित किये जाते हैं, तो भारतकी कुछ, जातियों में यौन संबंधी कठोर नियम भी

लक्षित होते हैं। मनुष्य में "काम" यह एक आवश्यक प्रवृत्ति है। साहित्य में भी इस प्रवृत्ति को उभरा है। डॉ.दशरथ मिश्रके अनुसार - "अधिकांश महानगरीय जीवनपर आधारित कहानियाँ और उपन्यास व्यक्तिकी अहेतुक काम-लिप्सा को यौन-संबंधोंका यथार्थ रूप मान लेते हैं, और एक आधुनिक समस्या बनाकर पेश करना चाहते है।"[५] सन साठ के पश्चात लिखे गये हिंदी के ढेर सारे उपन्यासों में स्त्री-पुरुषों के यौन-संबंधों तथा कामकुंठा जनीत यौन-संबंधोंपर गहराइसे सोचा है। "लाल-पीली जमीन" साठोत्तर कालखंडका एक महत्वपूर्ण उपन्यास हैं जिसमें गोविंद मिश्रने इस आंचलमें स्त्री-पुरुषों के यौन संबंधों तथा कामकुंठाओं पर गहराई से चिंतन किया है। विवाह बाहय, विवाहपूर्व, विवाहोत्तर यौन-संबंधोंपर तथा यौन-संबंधोंसे निर्मित कामकुठाओंपर प्रकाश डाला है।

"लाल-पीली जमीन" में केशव-छबि, केशव-मालती, केशवकी माँ, केशवके मुहबोले मामा, बढे-शांती, कल्लू-शैलजा, सुरेश-छबि, नारायण-छबि, शन्नो-लाखोटिया, झल्लू पंडित-शांती, इन विविध यौन संबंधों को दिखाकर लेखक ने "लाल-पीली जमीन", में "सेक्स" प्रवृत्तिपर बल दिया है। इसमें कामकुंठाके भी दर्शन होते है। केशव-छबि, और केशव-मालती, के संबंधों में कामकुंठाके दर्शन होते हैं। केशव-मालती से कम उम्रका होने के बादभी मालती से आकर्षीत होता हैं। केशव के इन यौन संबंधोमें कामजन्य कुंठा स्पष्ट होती हैं।

यहाँ झल्लू पंडित का मालतीपर बलात्कार उसकी अत्यधिक कामकुंठाका परिचायक लगती है। कल्लूद्वारा शैलजाको भगाना, विधवा शन्नों का अपनी दमीत कामवासनाको पूर्ण करनेके लिए लाखोटिया के साथ संबंध रखना, यहांपर अवैध-यौन संबंधोंके दर्शन होते हैं।

सुरेश सांडकी भान्ती अपनी गुंडई के बलपर इस जमीनसे जूडी कोमल युवतियों को रौंदता रहता है। इसमें भी सुरेशकी कुंठाके दर्शन होते हैं। बडे और शांती के यौन संबंध उचित लगते हैं, परंतु बडे शांतीको प्राप्त नहीं कर सकता है। केशव की मांके केशवके मुहबोले मामा के साथ-स्थापित यौन-संबंध अवैध-यौन संबंधोंका एक ऊँचा नमुना लगता है। स्पष्ट है कि प्रस्तुत उपन्यासमें विविध स्तरके और विविध प्रकारके यौन संबंध देखनेको मिलते हैं। यहाँ भोगी प्रवृत्ति और कामकुंठा के दर्शन होते हैं।

गोविंद मिश्रजीने ईस माटीसे जुडे हुए युवक युवतियों के, स्त्री-पुरुषों के यौनसंबंधोंको उचित परिवेशजन्य धरातलपर सफलताके साथ चित्रित किया है। शांती और बडे के यौन संबंधोकी सुखद अनुभूति करा देनेवाला यह क्षण काफी सुखद लगता है। "वह बडेपर झुक जाती अपना सिर उसके सिनेपर करीब-करीब टिका देती तब बडेके नथुने शांती के बालोंकी खुशबुसे भर उठते।" ऐसे कओ बहुत कम सुखद यौन-संबंध यहाँ देखने को मिलते हैं।

प्रस्तुत उपन्यासमें स्त्री-पुरुष यौन संबंधोंमें विस्तार से सोचा हैं। साठोतरी कालखण्ड के पुरुष-महिला उपन्यासकारोंने इन यौन-संबंधो' और कामकुंठाओं पर सोचकर यौन-संबंधोंके विविध आयामोंको उजागर किया हैं। गोविंद मिश्रने प्रस्तुत उपन्यास में यौन संबंधों का चित्रण तो गहराई से किया है। परंतु इन यौनसंबंधों से निर्मित रोमांटिकता से वे चतुराई के साथ बचे हैं। परिस्थितिजन्य मजबूरी से युक्त इन यौन-संबंधोंमें यथार्थ के दर्शन होते हैं। इसका विस्तार के साथ चित्रण "यौन-संबंधोंकी समस्या" इसके अंतर्गत किया है। यहाँ केवल संकेत देकर पुनरावृत्तिको टाल दिया है।

६. उत्सवपर्व

"भारत में उत्सवपर्व और त्योहारोंका विशेष महत्व है। इन उत्सवपर्वो और त्योहारों को मनानेके मूल में धार्मिक भावना प्रमुख रहती है। जिस धार्मिक समारोह में लोगोंको हर्ष, आनंद, और मनशांती की अनुभूति मिलती है, उसे उत्सव कहा जाता है।"[६] मानवको सामुहिक आनंदकी प्राप्ति करा देना, दुःख, व्यथाको मुक्ति तथा राहत दिलाना, मनको आनंद देना, आदि के कारण उत्सवों का निर्माण हुआ हैं। मानवका सामाजिक विकास भी इस उत्सवोंसे होता है। आज धर्म विकसित होने लगे हैं नये संप्रदाय उभरने लगे हैं इसीसे उत्सवों की संख्यामें भी वृद्धि होती जा रही है। देवताओं के सम्मान के लिए उत्सव, देवताओंकी कृपाके लिए उत्सव, धर्मप्रर्वतक एवं महात्माओं के पुण्यस्मरणके लिए उत्सव, मनाये जा रहे हैं। "लाल-पीली जमीन", में भी इन उत्सवोंका तथा मेलोंका चित्रण प्रभावी ढंगसे आया है, जिससे इस परिवेशकी सामाजिकता पर भी प्रकाश पडता है।

प्रस्तुत उपन्यास भारत के एक कस्बाई जीवन की छबि उभारता है। भारत के एक शहरसे दूर बसी शहरकी एक पहाडी बस्तीका वर्णन यहाँ मिश्र आँचलिकताको प्रस्तुत करता है।। इस अंचलके उत्सवपर्व, तिज,- त्योहार, लोकगीत आदि के माध्यम से इस उपन्यासकी अंचलिकता प्रकाश मे आती है। इस बस्ती में सभी तरहके लोग बसे हुए हैं। यहाँ का समाज जीवन विभिन्नतासे जुडा हुआ है। ये लोग परंपरागत उत्सवपर्व में अग्राणी नजर आते हैं। इस उपन्यास में मृत्ति-का पूजन जैसे उत्सव-पर्व मनानेका वर्णन आया है। इस अवसरपर नौरता त्योहार भी मनाने का वर्णन आया है। इस अवसर पर लडकियों के परंपरागत गीत सुनने को मिलते हैं। इस बस्तीमें दिवाली, होली, फाग, रंगकी होली, दशहरा आदि त्योहार धुम-धामसे मनाये जाते हैं। गोवर्धनका मेला, इस अवसरपर देवीदेवताओंकी की जानेवाली

पूजा और पर्वों या मेलों के आयोजनसे वहांके जीवन के तनाव और उत्सवपर्व के माध्यमसे यहाँ के यथार्थ जीवन को वानी देनेका काम किया हैं। इस उपन्यासके शहर में होली और दीवाली त्योहार मनाये जाते हैं। परंतु लेखककी छोटीसी टिप्पणी - "त्योहार जो ठिक उसी जगहका लगता था, वह होली का था," भयानक व्यंजना करती है। वह होली भाभी-देवर के मीठे परिहासके लिए या दुश्मनी भूलकर एक दूसरे के गले लगाने के लिए नहीं थी बल्कि बेबसों को अधिक यातना देकर अपनी नपुंसकता और क्रूरताकी अभिव्यक्ति के लिए थी। यह डकैती के खुले नोटीस की तरह आती थी।

७. अंधविश्वास

"अंधविश्वासोंका उद्गम मानव मनका एक अभियान है। इसका कारण है कि आदि मानवीय विकास स्थितिमें अंधविश्वास एक ऐसी दशाकी ओर संकेत करते हैं, जब मानव नामधारी प्राणीकी मानसिक शक्ति, प्रकृति तथा विश्वके प्रति एक जिज्ञासा, कौतुहल तथा भयकी मिली-जुली मनोवृत्तिका परिचय देती है।"[७] अंतः स्पष्ट है कि मानव जीवन के विकास में अंधविश्वासोंका महत्व है। जहाँ अज्ञान, अशिक्षाका बोलबाला रहता है, वहाँ अंधविश्वासोंका निर्माण होता है, मानसिक दुर्बलताभी अंधविश्वास की जननी हो सकती है। प्रस्तुत उपन्यास "लाल-पीली जमीन" का परिवेश शहरी इलाकेसे दूर बसा होने के कारण यहाँ अंधविश्वासों के लक्षण देखने को मिलते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास "लाल-पीली जमीन" का परिवेश मिश्र आँचलिकतासे युक्त होने के कारण, शहर से दूर बसी हुअी एक बस्ती के अंधविश्वासों को लेखकने यहाँ वानी देने का काम किया है।

प्रस्तुत उपन्यास में केशवके माध्यमसे भी अंधविश्वासोंपर प्रकाश डाला है।

"केशव को एक आदमीका शाम होतेही पहाडपर पत्थर बनकर चिपक जानेका आभास होना, दिनभर मुहल्ले में भूतकी तरह मंडराता रहना, केशवको उस व्यक्तिमें पहाड का दूत होनेका आभास होना, उस व्यक्तिद्वारा केशव के किवाडोंको गायब कर देनेका भय केशवके मन में निर्माण होना।" केशव ये सारी बातें बचपनसे सुनता आया है। पिछवाडे एक भूतका रहना, भूतकी चाल तेज रहना, भरी दोपहार में गली में एक आदमी का आना, देखते-देखते उसका उठ जाना, ये बातें भी केशव के अंधविश्वासपर प्रकाश डालती हैं। लोग कहते हैं कि, "रातका भूत बडे मोटे रीछ की तरह होता है, आदमियोंकी तरह चलता है... उसकी आँखें नही होती... उसकी नसें और हडियाँ चर...चराकर टूट जाती हैं।"[९] अंधविश्वास जनीत इस भूतका केशवको काफी डर लगता है। धर्मशाला में चुडैलोंके नाचगान, दीवानके बेटे का भूत बनकर छबिली के साथ रासलीला करना, केशव और उसके साथीको दोपहर में खेलते हुए चुडैलोंकी छुन-छुनाहट सुनाई पडता, सर्पमैथुनके समय झाडफूंक करने के लिए बुलाना, सांपको भगवानका रुप मानना, नागपंचमी के दिन साँपको दूध पिलाना, माँ के मंदिर में बलि चढाना, ब्राहमण को खिलाने से पुण्य लगना, लछमनकी बहन मालती के विवाह-संबंध तय करते समय ग्रहदशाकी स्थिति देखना सर्वेशकी दो पत्नियों की मौतके पीछे ग्रहकी दशाका कारण प्रस्तुत करना, सर्वेशकी कुंडली देखना, सर्वेशके पीछे शनीकी साडेसाती लगी रहने की शिकायत प्रस्तुत करना, आदिके माध्यमसे अंधविश्वास के दर्शन होते हैं। सर्वेशकी तीन पत्नियों की एकही वर्ष में मौत होनेपर लोग कहते है - "सर्वेशके घर कोई भूत रहता है, जो वहाँ आनेवाली किसीभी औरतको खा जाता है।"[१०] मंदिर में जाकर मनौतियाँ मनाना, धनको बनाये रखनेके लिए देविदेवताके चरणोंपर माथा टिकाना, ये सारी बातें अंधविश्वासकी परिचायक लगती हैं।

केशव के पिताजी भी अपनी लडकीके विवाहके बारे में ईश्वरपर भरोसा

रखते हैं। इसतरह यहाँ अंधविश्वास के विविध प्रकार दिखाई देती हैं। ये अंधविश्वास बच्चों में, शिक्षित-अशिक्षित लोगोमें भी देखनेको मिलते हैं। परिवेशकी मानसिकता के दर्शन इन अंधविश्वासोंमें देखनेको मिलते हैं। परिवेश की भयानकता के प्रतिबिंब इन अंधविश्वासोंमें प्रतिबिंबित हुए हैं।

८. जातीय भेदाभेद

भारतीय समाज का आधार पुरातन कालसे जातिसंस्था रहा हैं। अनेक परिवर्तनोंके बाववजूद भी भारत में जाती संस्थाने अपना अटूटस्थान बनाए रखा जातिय संस्था का समाज, देश तथा व्यक्तिके जीवनपर लाभदायक या हानीकारक असर हो रहा हैं। यज्ञदत्त शर्मा के अनुसार - "हिंदु धर्म में जातियोंका उदय हुआ, जिससे जाति विद्वेष की मात्रा बढी और पारंपरिक घृणाको प्रश्रय मिला। जाति के उत्थान में यह सहायक न होकर बाधक हुओ। मानवता एवं सभ्यता का धीरे-धीरे ऱ्हास हुआ।"[११] जातिपातीके कारण मनुष्य-मनुष्य में दीवारें खडी हुओ परिणाम स्वरूप ग्रामीण और नागरी जीवन का समूहजीवन खंडित हुआ।

भारत में सदियोंसे जातिय भेदाभेदके विविध पक्ष देखनेको मिलते हैं। जातीय भेदाभेदसे निर्मित समाज स्थितिके दर्शन हमें स्वातंत्रोतर हिंदी साहित्य में प्रभावी ढंगसे देखनेको मिलते हैं। गोविंद मिश्रजीने "लाल-पीली जमीन" में जातिय भेदाभेद के विविध पहलुओंको स्पर्श किया हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में चौबालके चौबे, पंडितजी द्वारा पीटी जानेवाली उसकी पत्नीकी हालत देखकर बाहर ही बाहर से निकल जाते हैं। वे नीची जातिके झगडेमें पडना अपनी शानके खिलाफ मानते हैं। वे झल्लू पंडित को पंडित न मानकर चमार मानते हैं। उसको मंदिरकी पूजासे करवा देनेका मौका ढूढते हैं। जादव मात्र ऐसे नीच

लोगोंको मंदिर में पूजारीके रुपमें बिठलाकर मंदिरकी पवित्रता को भंग कर रहा है, ऐसी चौबेकी राय है।

जादव और चौबेके बीच जातीय भेदाभेदके कारण ही संघर्ष शुरू होता है। कैलाश कामता को कहता है - "नाईकी औलादें। हजामतके अपने उस्तरे ले आओ।" यहाँ कैलाशको देखते हुए छुटई अपने साथीयों को लेकर भाग जाता है।

इस उपन्यास में नीच जातीको संगठित करनेका प्रयत्न मंझले और कनफट्टे के द्वारा किया जाता है। इसपर प्रकाश डालते हुए लिखा है - "लेकिन ऊन सालों को गुलामी करनेसे फुरसत नहीं थी। वर्णा ये इतने जादा है तादादमें कि ब्राहमण-ठाकुरोंको तो हरगांवमें उखाडकर फेंका जा सकता हैं साले।"[१२] यहाँ नीचली जातिके संगठनके माध्यमसे जातीगत संघर्ष छेडने का प्रसंग देखनेको मिलता है। इस उपन्यासके पात्र शिवमंगलने जातीय भेदाभेदका फायदा लेकर लोगोंकी सेना तैयार की। छुटई कामता भी उसे आ मिले। जातीयता के आधारपर उसने अपनी शक्तिको बढानेका प्रयत्न किया। छोटी जातिपर हो रहे अत्याचार का बदला लेनेका निर्णय उन्होंने किया। लडकी की लढाई को जातियताका रंग दिया। चौबेने कैलाश को घिरकर अपने मुहल्लेमें ४१८ नाइयोंसे एक ब्राहमण के लडकेको पीटवाया। केशवके बापको कोरी के शिवहरेने पिटा जातीयताने राजनीतिक रंग पकडा। ठाकूर इस जातीय भेदा-भेदके बलबुतेपर अपनी पार्टी की इमेज बढाना चाहता था। इस तरह यहाँ जादव-चौबेकेबीचकी लढाइयाँ जातीय भेदा-भेदके रंगको गहरा बना देती है।

इस भेदा-भेदके कारण इस बस्तीकी सामाजिकता स्पष्ट होती हैं। हर गांव हर कस्बे या हर शहर में जातीय भेदाभेदकी दीवारें देखनेको मिलती हैं।

गोविंद मिश्रजीने राजनीति जातिय भेदा-भेदको रंग देकर अपना उल्लू कैसे सीधी करती हैं, इसपर भी प्रकाश डाला हैं। आजभी हम देखते हैं कि जिस भाग में जिस-जातिके व्यक्तियों की अधिकता होती है, उसी प्रभाग में उसी जातिके व्यक्तिको चुनावके लिए उम्मीदवार बनाया जाता हैं। राजनीतिज्ञ जातियता के नामपर संघर्ष शुरु करके, इस संघर्ष का फायदा खुदके लिए करवा लेते हैं। इस काम में गुंडे लोगोंकी मदद अधिक करते हैं।

९. छात्रआंदोलन

"छात्रोंद्वारा चलाये गये आंदोलन में युवा-आक्रोश की नाना शक्लों के दर्शन होते हैं। आक्रोशसे भरी हुआी युवा शक्ति विविध भंगीमाओं से ओत-प्रोत लगती हैं। यह आंदोलन हासिलवादसे प्रेरित होता है, इसके पीछे वैचारिक शक्तिका अभावभी लक्षित होता है। युवा-शक्ति की पस्त होती जा रही मानसिकता का पता छात्र आंदोलनके माध्यमसे लगता हैं। इस युवाशक्तिकी कुंठित होती जा रही मानसिकतापर भी प्रकाश पडता है। स्वतंत्र भारतकी राजनीतिक और आर्थिकनीतिने युवाशक्तिको अराजक होने को बाध्य किया है। इस स्थितिमें छात्रआंदोलन की कचोट में फंसकर युवाशक्ति नशैले पदार्थों का सेवन करने लगी है। सामाजिक जातिवीधियों से टकराने लगी है।"[१३] "लाल-पीली जमीन", में चलाये गये छात्रआंदोलन में युवाशक्तियों के लिए उपयुक्त सभी तथ्य देखने को मिलते हैं।

इस उपन्यास में गोविंद मिश्रजीने छात्रआंदोलन का एक भाग प्रस्तुत करते हुए - छात्रआंदोलनकी स्थिति और गतिपर प्रकाश डाला है। अपनी उचित मागोंपर व्यवस्थाके खिलाफ छात्रआंदोलन खडे किये जाते हैं परंतु इस छात्रशक्ति के बीचमें बिचौलिया शक्तिके आगमनसे पूरी छात्रशक्ति गलत रास्तेपर कैसे जाती है, इसका चित्रण

छात्र आंदोलन के माध्यमसे लेखकने किया है। स्कूल के प्रिन्सिपल के रिटायर होने के बाद उनकी जगह मास्टर कंठीको न लेकर किसी बाहर के व्यक्ति को लेना, छात्रवासके छात्रों कों भरपेट अन्न न देना, स्कूलकी मॅनैजमेंट के द्वारा शिक्षा संस्थापर अधिकार जताना, इन सभी हरकतों के खिलाफ छात्र आंदोलन खड़ा होता है, परंतु छात्रों को गुमराह करनेवाली बिचोलियाँ शक्ति के कारण छात्रआंदोलन हिंसक बन जाता हैं। लेखकने यहाँ छात्रआंदोलनकी घटनाएँ प्रस्तुत करते हुए छात्रआंदोलन पर व्यंग्य किया है। "छात्र आंदोलन की समस्या" इस समस्याके अंतर्गत इसपर विस्तारसे सोचा है। यहाँ केवल संकेत देकर पुनरावृत्तिको टालनेका प्रयत्न किया है।

गोविंद मिश्रजीने इस अंशके द्वारा राजनीतिक गतिविधियों के प्रश्रय में पलनेवाली गुंडई और गुंडई से छात्र आंदोलन में घुसनेवाली गलत नीतियोंपर व्यंग्य किया है।

१०. आपसी संघर्ष

प्रस्तुत उपन्यास की जमीन आपसी संघर्ष से साक्षात महाभारतको अवतरीत कराती है। इस उपन्यास में पति-पत्नी के बीच आपसी संघर्ष है, कल्लू और शिवमंगल के बीच आपसी संघर्ष है, मास्टर कौशल और कैलाशके बीच संघर्ष, शिवराम और कल्लन के बीच संघर्ष है, कैलाश और कल्लू के बीच संघर्ष है, सुरेश और झल्लू पंडित के बीच संघर्ष है, शिवहरे और केशवके पिताजी के बीच संघर्ष है, चौबे और जादवजी के बीच संघर्ष है, शिवहरे और केशव के पिताजी के बीच संघर्ष है, चौबे और जादवजी के बीच संघर्ष है, रघु और उसके बेटेके बीच संघर्ष है, सुरेश और नारायण के बीच संघर्ष हैं , केशव और लछमन के दादाके बीच संघर्ष है कैलाश और कामता के बीच संघर्ष हें, कल्लू और कैलाशके बीच संघर्ष है, शिवराम

और कल्लनके बीच आदालती संघर्ष है, मास्टर कंठी और शिवमंगल के बीच संघर्ष हैं।

इस प्रकार पूरा माहौल गुंडई और नंगई के साथ-साथ आपसी संघर्ष के कारण एक युद्ध स्थल लगता है।

इन सभी प्रकारके आपसी संघर्षो में इर्ष्या, द्वेष, दुश्मनी, आदिके दर्शन होते हैं। पति-पत्नी, बाप-बेटा, पडोसी-पडोसी दो अलग-अलग स्थानों के राजनीतिक नेता, छात्र-अध्यापक, मित्र-मित्र आदि के रूप में संघर्ष स्थल देखने को मिलते हैं। यहाँ भाईचारेंका नाममात्र अंश भी देखने को नहीं मिलता है। हर व्यक्ति दूसरेसे लडता-झगडता देखनेको मिलता है। अभावजन्य स्थितिके मूल में संघर्ष के बीज बोये जाते हैं। यहाँ इसी तथ्यके भी कहीं-कहींपर दर्शन होतेहै। पूरे कस्बेका माहौल इस संघर्ष के कारण असुरक्षित बन बैठा है। केशव जैसा बालक इस संघर्ष में झुलस जाता है। युवावस्था में पदार्पित युवतियों का कोमल मन मुरझा जाता हैं।

११. विविध प्रकार के खेल और मनोरंजन के तौरतरीके

"सुख-दुःख से मिश्रित इस मानवी जीवन में मानव अपनी व्यथा, पीडा तथा दर्द और गमको भूलानेके लिए और क्षणभरभी क्यों न हो आनंद प्राप्ति के लिए मनोरंजन के साधनों का प्रयोग करता हैं। आदिम युगसे लेकर आजतक मानव मनोरंजन के साधनों के आधारपर अपना जीवन सुचारू ढंगसे व्यतीत करना चाहता है। बच्चोंसे लेकर बडे-बूढें तक, गरीबोंसे लेकर अमीरोंतक, देहातोंसे लेकर महानगरोंतक सभी लोग अपनी-अपनी हैसियतसे मनोरंजन करना चाहते हैं। "[१४] इस उपन्यास में अंचलके विविध प्रकारके खेल और मनोरंजनके तौर तरीके चित्रित किये है। इस भयावह परिवेश में केशव लछमन और अन्य साथीयों द्वारा गुल्ली डंडेका

खेल खेलना, केशव, लछमन, सुरेश शिवमंगल आदि के द्वारा हॉकी, फूटबॉल खेलना, मंदिरको परिक्रमाके साथ बिट्टी, सुखो, मुन्ना द्वारा लुका छीपीका खेल खेलना, शिवराम और कल्लन द्वारा तीतर लढानेका खेल-खेलना, कुस्तियाँ लड़ाना, आदि विविध प्रकारके खेलोंका चित्रण और मनोरंजकी तौर-तरीकें प्रस्तुत उपन्यास में देखने को मिलते हैं। इस खेलोंसे उपन्यास के वातावरणकी भयावहता और हिंस्त्रता में थोडीशी शिथिलता आ गयी है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत उपन्यास "लाल-पीली जमीन" में चित्रित भयावह परिवेश, भयावह परिवेशकी हिस्त्रता, भयावह परिवेश में स्थित गुंडई, नारीशोषण के विविध आयाम, स्त्री पुरुष यौन-संबंध, और इंससे उत्पन्न कामकुंठा, उत्सवपर्व, अंधविश्वास, जातिय भेदाभेद, छात्रआंदोलन, आपसी संघर्ष, विविध प्रकारके खेल और मनोरंजनके तौर तरीकें आदि तथ्यों को मध्यनजर रखते हुए हमने "लाल-पीली जमीन", का अनुशीलन किया है। "लाल-पीली जमीन", में चित्रित परिवेशकी भयावहता, इस भयावह परिवेशके विविध आयाम, यहाँ चित्रित अबला नारियें के प्रति पुरुषों की हिस्त्रता, शिवमंगलल, सुरेश , शिवहरे, झल्लू पंडित आदिकी गुंडई, मालती, छबि, शांती, शैलजा, शन्नोमौसी आदि के शोषण के विविध आयाम, मालती और छबिसे स्थापित प्रेमसंबंधोंसे केशवकी कामकुंठा, शन्नो और केशव की माँ के अवैध यौन संबंध, छबि और भट्टकी लडकीपर सुरेशद्वारा की गई जबरी, पंडित झल्लूद्वारा माल्तीपर किया गया बलात्कार आदि तथ्य इस के साथ जुडे हुए काम कुंठाजन्य यौन-संबंधोपर प्रकाश डालते हैं।

इस उपन्यास में परिवेशकी भयावहता, हिस्त्रता, गुंडई और नंगई के साथ-साथ उत्सवपर्वों के वर्णन भी आये हैं जो इस तनावपूर्ण माहौल में ठंडक पैदा करते हैं। इस उपन्यास में "मृत्तिका" पूजन और "नौरता" त्योहारके समय परंपरागत

नारियों के गीतोंका आयोजन तनावपूर्ण वातावरण में ढिल पैदा करता हैं। यहाँ दीवाली, होली, फाग, दशहरा जैसे त्योहार मनाये जाते हैं। देवीदेवताकी पूजा के बहाने गोवर्धन मेलेका आयोजन किया जाता है। रासलीला संपन्न करायी जाती हैं। इन उत्सवपर्वो के माध्यमसे हिंसाकी और पीडाकी यह जमीन चंद लमहोंके लिए हसी खुशी का और आनंदका वातावरण निर्माण कर देती है।

प्रस्तुत उपन्यास में भूतपिशाच को लेकर, शादी-विवाह को लेकर, मौतको लेकर, पुरानी इमारतों और तालाबों को लेकर ,पहाडी भूखंडो को लेकर अनेक अंधविश्वास प्रस्तुत किये गये हैं। बच्चों से लेकर बडे-बुढों तक सबके सब लोग इन अंधविश्वासों में गोते खाते हुए नजर आते हैं।

मुंढई और हिंस्त्रता की यह जमीन जातिय भेदा-भेदका अड्डा बनी हुई हैं। इस उपन्यासमें राजनीति के प्रश्रय में पली हुई जातीयता, भेदा-भेद की स्थितियाँ, सामान्य व्यक्तियोंमें जातिय भेदा-भेदको लेकर किये जानेवाले झगडे आदिके दर्शन होते हैं। इन जातिय भेदा-भेदके परिणाम स्वरुप यहाँ अनेक आपसी संघर्ष भी ऊभरे हुए दिखाई देते हैं। जादव और चौबेके बीचका संघर्ष, चौबे और झल्लू पंडितका संघर्ष इस जातिय भेदा-भेद के अच्छे उदाहरण हो सकते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में आपसी संघर्ष के अनेक उदाहरण देखनेको मिलते हैं, जिससे हिंसाकी और पीडाकी यह जमीन साक्षात महाभारत के दर्शन करा देती है। यहाँ झल्लू और शिवमंगल के बीचका संघर्ष, सुरेश और पंडित के बीचका संघर्ष, कैलाश और शिवमंगल के बीच का संघर्ष, शन्नो, और केशवकी माँके बीचका संघर्ष, पंडित और मामा के बीच का संघर्ष, शिवमंगल और केशवके पिताजी का संघर्ष, सुरेश और नारायण का संघर्ष, कल्लू-कैलाश का संघर्ष आदि संघर्ष के विविध आयामों की "पोल" खोलते हैं। ये संघर्ष कभी-कभी नैतिकताको लेकर तो कभी-कभी राजनीतिक दावपेचोंकी परिणाम स्वरूप खडे होते हैं। लेखकने प्रसंगानुकूल इन संघर्षों को खडा करके अपनी अनुभूति और संवेदनाका गहरा परिचय पाठकोंको करा दिया है।

इस उपन्यास में इन लोगों के मनोरंजन के विविध तौर-तरिकें और खेलोंके विविध प्रकारोंका चित्रण प्रस्तुत करते हुए हिंसाकी और पीडाकी इस भूमिमें पलनेवाले मानवजीवनको राहत दिलानेका काम प्रभावी ढंगसे किया हैं। गोविंद मिश्रजी का "लाल-पीली जमीन," हिंदी उपन्यास साहित्य के आठवें दशककी एक महत्वपूर्ण उपलब्धी है, इसमें समकालीन सामाजिक, राजनीतिक जीवनकी विसंगतीको व्यंग्यात्मक शैली के सहारे प्रस्तुत करने का काम किया है।

यह उपन्यास सही ढंगसे अनुशीलनीय लगता है। इस उपन्यास की भाषाशैली इतनी प्रभावी है कि जिससे समकालीन सामाजिक जीवनकी यथार्थ पहचान होती है।

: चतुर्थ अध्याय :

लाल-पीली जमीन : एक अनुशीलन

संदर्भ सूची

१. डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर - गोविंद मिश्र सृजन के आयाम, वाणी प्रकाशन अन्सारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र.सं.१९९०, पृ.९३

२. वही - पृ.१०४

३. संपादक - वचनदेव कुमार - "अनुवाक्" शोधपत्रिका, हिंदी विभाग, रांची विश्वविद्यालय, अंक ३, वर्ष १९७९, पृ.३५

४. डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर - गोविंद मिश्र सृजन के आयाम, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.१९९०, पृ.९१

५. "धर्मयुग", ८ फरवरी, १९७६, पृ.१८

६. संपादक महादेवशास्त्री जोशी - मुलांचा संस्कृति कोश, प्रथम खंड, १९८४ भारतीय संस्कृति कोश मंडल, पुणे, पृ.१८५

७. डॉ.विद्येंद्रसिंह - शब्दार्थों के गवाक्ष, प्र.सं.१९८६, विवेक पब्लिशिंग हाऊस चौडा रस्ता, जयपुर, पृ.५७

८. गोविंद मिश्र - "लाल-पीली जमीन", राजपाल ॲण्ड सन्स कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्र.सं.१९७६ पृ.१९

९. वही - पृ.२०

१०. वही - पृ.१६०

११. यज्ञदत्त शर्मा - प्रबंध सागर, प्र.सं.१९८९, अक्षर प्रकाशन, सोनीपत पृ.१५३

१२. गोविंद मिश्र -"लाल-पीली जमीन", राजपाल ॲण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं.१९७६, पृ.१४७

१३. संपादक- डॉ. वचनदेव कुमार - "अनुवाक्" शोधपत्रिका, हिंदी विभाग, रांची विश्वविद्यालय, अंक- ३, वर्ष, १९७९, पृ.८२

१४. डॉ.बी.डी.सगरे - हिंदी के स्वातंत्र्योत्तर आंचलिक उपन्यासोंमें चित्रित पहाडी जनजीवनका चित्रण, शिवाजी विश्वविद्यालय की पीएच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबंध, दिसंबर, १९९५, पृ.२१५-२१६

-o-o-o-o-o-